वो बचपन जो कुछ खास है

जगदीश यादव, आकाश मालवीय

बचपन एक बहुत ही विशेष अवस्था होती है क्योंकि बच्चे ही नहीं, बड़े भी अपने बच्चों के बचपन को भरपूर जीते हैं, और बचपन का आनन्द लेते हैं। परन्तु यह भी एक वास्तविकता है कि इस अवस्था में कई सारे बच्चे अपने बचपन को मन माफिक जी ही नहीं पाते क्योंकि बच्चे के मन की भावनाओं को समझ पाना, इस अवस्था के गुणों को पहचान पाना, उनकी ज़रूरतों को समझ पाना हर किसी के लिए आसान नहीं होता है। यहाँ आप प्रकाश नाम के एक बच्चे के बचपन की वास्तविकताओं से रूबरू होंगे।

प्रकाश होशंगाबाद ज़िले के एक गाँव में रहता था। माँ से अलग होने के बाद वह बैतूल ज़िले में अपनी नानी के साथ रहता है। 2023 में प्रकाश 13 साल का हो गया था और कक्षा तीसरी में पढ़ता था। आप सोच रहे होंगे कि उम्र तो ज़्यादा है फिर कक्षा तीसरी में क्यों। इस बारे में आप आगे जानेंगे।

घरु हालात थे ऐसे

छुटपन में प्रकाश अपने माता-पिता और भाई-बहन – पूरे परिवार के साथ अपना बचपन जी रहा था। प्रकाश के पिता आदतन शराबी और हिंसक प्रवृत्ति के थे। शराब पीना और घर में पड़े रहना, यही उनका रोज़ का काम था। प्रकाश की माँ मज़दूरी करके जितने भी पैसे लातीं, प्रकाश के पिता मारपीट कर सारे पैसे छीन लेते और शराब में उड़ा देते। यही घटनाक्रम चार साल तक चलता रहा - शराब पीकर आना, गाली-गलौज कर घर की शान्ति को भंग करना, धमकी देना, पत्नी और बच्चों को मारना। कई दिन ऐसे भी आते थे जब इन सबसे बचने के लिए प्रकाश की माँ को अपने बच्चों के साथ पड़ोसियों के घर में बिना खाए-पिए छिपे रहना पड़ता था। फिर एक बार प्रकाश की माँ ने जोखिम उठाया और अपने तीनों बच्चों को लेकर मायके चली गईं। अब मायकेवालों को भी लगने लगा कि जान पर बन आई है इसलिए बेटी और बच्चे मायके में ही रहें। प्रकाश जब दो साल का था तब उसके माता-पिता एक-दूसरे से अलग हो गए थे।

पति से अलग होने के बाद प्रकाश की माँ अपने तीन बच्चों के साथ मायके में 5 साल तक रहीं। मायके

की आर्थिक स्थिति भी दयनीय थी इसलिए इन सबके खर्चे भारी पड़ने लगे। प्रकाश के मामा और नानी ने मिलकर प्रकाश की माँ के लिए दूसरा रिश्ता पक्का कर दिया। यहाँ भी मुसीबतें झेलने के बाद प्रकाश की माँ ज़्यादा सोच नहीं पाईं और इस रिश्ते के लिए हामी भर दी।

प्रकाश अब तक 7 साल का हो चुका था। प्रकाश की माँ अपने दो बच्चों के साथ अपनी नई ज़िन्दगी की शुरुआत करने के लिए मुम्बई चली गईं। प्रकाश अपने मामा और नानी के साथ ही रुका रहा। आप सोच रहे होंगे कि आखिर माँ अपने तीसरे बच्चे, प्रकाश को अपने साथ क्यों नहीं ले गईं। इसका मुख्य कारण था, प्रकाश का शारीरिक रूप से थोड़ा-सा अक्षम होना। प्रकाश के दोनों हाथ शरीर के बाकी अंगों की तुलना में थोड़े छोटे, दुबले और खिंचे हुए हैं। जब वह चलता है तो उसके पैर और हाथ मुड़े और फैले हुए रहते हैं। शायद इसीलिए प्रकाश की माँ ने उसे मायके में ही छोड़ना सही समझा।

प्रकाश का लर्निंग सेंटर तक आना

ग्रामीण अंचल के कई गाँवों में *एकलव्य* फाउण्डेशन द्वारा 'मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर' चलाए जाते हैं। प्रकाश के गाँव में भी ऐसा ही एक सेंटर चलाया जा रहा है। इस सेंटर का संचालन जगदीश यादव करते हैं। प्रकाश ने इस केन्द्र में आना किस तरह शुरू किया, इसके बारे में जगदीश बताते हैं कि एक दिन जब वे मोहल्ले के बच्चों से सम्पर्क करने पहुँचे तो उस दौरान उनकी मुलाकात प्रकाश से हुई। प्रकाश उस वक्त टायर से खेल रहा था। जगदीश ने यह वाक्या यूँ बयान किया।

मैंने पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

कुछ देर के लिए वह बच्चा चुप रहा और फिर बोला, "प्रकाश।"

मैंने फिर पूछा, "कौन-सी कक्षा में पढ़ते हो?"

उसने कहा, "मैं नहीं पढ़ता हूँ।"

"अच्छा, कितने साल के हो गए हो?"

प्रकाश ने कहा, "9 साल।"

"स्कूल क्यों नहीं जाते हो?"

प्रकाश ने जवाब दिया, "मैं सब लोगों जैसा चल-फिर नहीं सकता। मुझे सब बच्चे चिढ़ाते हैं, और लड़ाई करते हैं। इसलिए मेरे मामा और नानी स्कूल जाने से मना करते हैं।"

मैंने पूछा, "पढ़ना चाहते हो?"

प्रकाश ने कहा, "मामा और नानी बोलेंगे तो पढ़ लूँगा।"

फिर मैं प्रकाश के साथ उसके घर गया और उसके मामा और नानी से पूछा, "आप प्रकाश को स्कूल क्यों नहीं भेजना चाहते हैं?"

प्रकाश के मामा ने जवाब दिया कि "प्रकाश का आधार कार्ड और समग्र आईडी नहीं हैं। अब हम क्या

करें। प्रकाश की मम्मी मुम्बई में रहती हैं और प्रकाश के पापा ने इसे छोड़ दिया है। फिर भी हमने कोशिश की कि स्कूल में उसका दाखिला हो जाए परन्तु शिक्षकों ने बिना आईडी के दाखिला देने से मना कर दिया।"

मैंने कहा, "स्कूल न सही पर गाँव में *एकलव्य* द्वारा बच्चों के लिए खोले गए केन्द्र में आप प्रकाश को भेज सकते हैं। मैं प्रकाश का पूरा ध्यान रखूँगा।" उनके चेहरे बयाँ कर रहे थे कि वे प्रकाश को केन्द्र में भी नहीं भेजना चाहते थे। उन्हें डर था कि प्रकाश की बाकी बच्चों के साथ नहीं बन पाएगी।

मैंने कहा, "लड़ाई नहीं होगी। मैं वहाँ किस लिए हूँ!" फिर भी नानी नहीं मानीं, तो मैंने कहा, "अच्छा, एक काम करते हैं। कुछ दिनों तक मैं प्रकाश को केन्द्र साथ ले जाऊँगा और वापस घर भी छोड़ दिया करूँगा।" यह सुनकर प्रकाश के मामा और नानी उसे 'मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर' भेजने के लिए राज़ी हो गए।

आपसी सामंजस्य की चुनौतियाँ

प्रकाश की ज़िम्मेदारी तो ले ली थी परन्तु मैं काफी चिन्तित था कि प्रकाश के साथ सब ठीक रहेगा या

नहीं। बहरहाल, कुछ दिनों तक मैं प्रकाश को अपने साथ लाना, ले जाना करता रहा। ऐसा करने से प्रकाश और प्रकाश के परिजनों का मेरे प्रति विश्वास बना। कुछ दिनों बाद प्रकाश के मामा और कभी-कभार उसकी नानी भी छोड़ने के लिए आने लगे। और बाद में वो दिन भी आया जब प्रकाश अकेला केन्द्र पहुँचने लगा।

शुरुआत में प्रकाश बहुत ही चुप-चुप-सा रहता था। किसी से ज़्यादा बातें नहीं करता था परन्तु जो काम उसे दिया जाता, उसे वह कर लेता था। लेकिन बाकी बच्चे उससे दोस्ती नहीं करना चाहते थे। उन्हें लगता था कि प्रकाश उन जैसा नहीं है, शरीर और स्वभाव से अलग है।

कुछ बड़े बच्चे प्रकाश को केन्द्र में आते-जाते परेशान करते थे। उसे कुछ भी बोल देना, चिढ़ाना आदि मेरी उपस्थिति या अनुपस्थिति में चलता रहा। बच्चों के इस बर्ताव से प्रकाश रोने लग जाता और गुस्सा होकर घर चला जाता था। कई बार तो वह गुस्से में आकर बच्चों को मार भी देता था। यह सब देखकर मुझे प्रकाश की काफी चिन्ता होने लगी थी परन्तु मैंने ठान रखा था कि प्रकाश के प्रति बाकी बच्चों के रवैये को बदलकर रहूँगा।

इन व्यावहारिक समस्या से छुटकारा पाने के लिए मैंने आकाश मालवीय जो इसी केन्द्र में मेरे साथी हैं, के साथ मिलकर सभी बच्चों से गम्भीरता के साथ सामूहिक रूप से बातचीत की और उनसे पूछा, "तुम सब प्रकाश के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो जबकि प्रकाश भी तुम जैसा ही बच्चा है? क्या उसे तुम लोगों के चिढ़ाने से बुरा नहीं लगता होगा? उसे गुस्सा नहीं आता होगा? यदि कोई तुम्हें कुछ भी बोलकर चिढ़ाए तो तुम्हें कैसा महसूस होगा?" इस तरह की स्पष्ट बातचीत से

बच्चे थोड़े तो संवेदनशील और सतर्क हुए।

इसके अलावा प्रकाश से भी अकेले में और पालक सम्पर्क के दौरान बातचीत होती रही। केन्द्र में वह जो भी काम करता, उसकी प्रशंसा सभी बच्चों के समक्ष की जाती, समूह में कार्य करते वक्त उस पर विशेष ध्यान रखा जाता। इससे उसका आत्मबल बढ़ा और वह चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए भी तैयार हुआ। इन सभी प्रयासों की बदौलत धीरे-धीरे प्रकाश का मन केन्द्र में रम गया और बाकी बच्चों के साथ तालमेल भी बढ़ा।

केन्द्र में आने से पहले प्रकाश को बीड़ी पीने और गुटखा खाने की लत लगी हुई थी। यह लत उसे अपने मोहल्ले के अन्य बड़े बच्चों को देखकर लगी थी। हमने प्रकाश को समझाया और उसके परिजनों से भी इस पर बात की और प्रकाश को इस लत से दूर किया।

प्राइमरी शाला में दाखिला

साल 2020 में, गाँव के प्राइमरी स्कूल में सहजकर्ता अशोक सर का आना हुआ। अशोक अनियमित बच्चों से सम्पर्क करने के उद्देश्य से प्रकाश के मोहल्ले में गए। वहाँ उनकी मुलाकात प्रकाश से हुई। जब उन्होंने प्रकाश से पूछा कि कौन-से स्कूल में पढ़ते हो तो प्रकाश ने कहा, "स्कूल तो नहीं जाता पर मोहल्ला केन्द्र में पढ़ने जाता हूँ।" यह सुनकर अशोक सोच में पड़ गए कि प्रकाश 9 साल की उम्र में भी स्कूल में पढ़ने क्यों नहीं जाता। प्रकाश के मामा और नानी से बात करने पर उन्हें मालूम चला कि प्रकाश का आधार कार्ड और समग्र आईडी नहीं हैं। इसलिए अभी तक उसका स्कूल में दाखिला नहीं हो पाया है। अशोक जी की मदद से प्रकाश के दोनों पहचान पत्र जल्द ही बन गए। उसके बाद प्रकाश मोहल्ला केन्द्र के अलावा स्कूल भी जाने लगा। उस वक्त प्रकाश को पहली कक्षा में दाखिला मिला था, अब वह कक्षा चौथी में पहुँच गया है।

मोहल्ला केन्द्र में

नियमित रूप से आने की वजह से वह भाषा और गणित की बुनियादी दक्षताओं को हासिल कर पाने में सफल हो पाया है। अब प्रकाश हिन्दी लिख और पढ़ लेता है। 1000 तक गिनती लिख और पढ़ लेता है। चार अंकों में हासिल के जोड़, घटाने के बिना हासिल वाले सवाल, दो संख्या में एक संख्या का गुणा करना, सम संख्या में भाग करना जैसे सवाल व भिन्न के सवाल भी हल कर लेता है। प्रकाश को बतौर प्रोत्साहन क्लास का मॉनिटर बना दिया गया है।

प्रकाश की पारिवारिक स्थितियों को देखें तो पिता की बुरी आदतों की वजह से माता-पिता अलग हो गए। ऐसे में वह जिस प्यार-दुलार का हकदार था, वो उसे नहीं मिला। शारीरिक विकलांगता की वजह से माँ उसे छोड़, उसके बाकी भाई-बहन को साथ लेकर दूसरे पति के घर चली गईं। इस तरह उसे भाई-बहन के स्नेह से भी वंचित होना पड़ा। लेकिन मोहल्ला सेंटर की पहल से प्रकाश को पढ़ाई करने और स्कूल जाने का मौका मिल पाया। तमाम चुनौतियों के बावजूद वह कुछ अच्छा कर सकता है, यह दिखा पाने का अवसर भी उसे मिला।

आज भी शारीरिक या मानसिक रूप से अक्षम बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा में शामिल करने तथा समावेशी शिक्षा के लिए संवेदनशील और उपयुक्त माहौल बना पाना एक संघर्षभरा काम है जिसकी बहुत ज़रूरत है।

इस लेख में पहचान उजागर न हो इसलिए बच्चे का नाम एवं जगह के नाम बदल दिए गए हैं।

जगदीश यादव: तीन वर्षों से *एकलव्य* संस्था, शाहपुर में बच्चों और समुदाय के साथ जुड़े कार्यों जैसे - मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर और टेक्नोलॉजी मीडिएटेड इंटरेक्टिव लर्निंग से जुड़े हुए हैं। बच्चों और समुदाय के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में खास रुचि रखते हैं। वर्तमान में, *एकलव्य* के लाइब्रेरी और रीडिंग इनीशिएटिव में सामुदायिक पुस्तकालय (चकमक क्लब) से जुड़कर बच्चों के साथ सीखने-सिखाने का काम कर रहे हैं।

आकाश मालवीय: आठ वर्षों से *एकलव्य* संस्था, शाहपुर से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में, शाहपुर में शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र की सम्पूर्ण ज़िम्मेदारियाँ सँभाल रहे हैं। बच्चों के साथ गणित सीखने और बच्चों, समुदाय और शिक्षकों के साथ काम करने में खास रुचि। साथ ही, *एकलव्य* में गणित स्रोत टीम के सदस्य हैं।

सभी चित्र: हिमांशी मोने: स्वतंत्र रूप से चित्रकारी करती हैं। डिज़ाइनिंग में विशेष रुझान। कुछ अद्वितीय तैयार करने के लिए रचनात्मकता और तकनीक का मिश्रण करने के लिए रोमांचित रहती हैं।

आभार: लेखन में सहयोग के लिए अशोक हनोते को धन्यवाद।